UP Board Class 6 Geography Notes Chapter 11 हमारा प्रदेश : उत्तर प्रदेश

क्र.सं.	मण्डल	जनपद सं0	जनपद
1.	लखनऊ	6	लखनऊ, उन्नाव, रायबरेली, सीतापुर, हरदोई एवं लखीमपुर खीरी
2.	कानपुर	6	कानपुर नगर, कानपुर देहात, इटावा, फर्रुखाबाद, कन्नौज एवं औरैया
3.	मेरठ	6	मेरठ, गाजियाबाद, बुलंदशहर, गौतमबुद्धनगर, बागपत एवं हापुड़
4.	फैजाबाद	5	फैजाबाद, बाराबंकी, अम्बेदकर नगर, सुलतानपुर एवं अमेठी
5.	अलीगढ़	4	अलीगढ़, हाथरस, एटा एवं कासगंज
6.	आगरा	4	आगरा, मथुरा, मैनपुरी एवं फिरोजाबाद
7.	वाराणसी	4	वाराणसी, गाजीपुर, चंदौली एवं जौनपुर
8.	गोरखपुर	4	गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर एवं महराजगंज
9.	देवीपाटन	4	गोंडा, बलरामपुर, बहराइच एवं श्रावस्ती
10.	बरेली	4	बरेली, शाहजहाँपुर, पीलीभीत एवं बदायूँ
11.	मुरादाबाद	5	मुरादाबाद, रामपुर, बिजनौर, अमरोहा एवं संभल
12.	इलाहाबाद	4	इलाहाबाद, कौशाम्बी, फतेहपुर एवं प्रतापगढ़
13.	चित्रकूटधाम	4	बांदा, चित्रकूट, महोबा एवं हमीरपुर
14.	मीरजापुर	3	मीरजापुर, भदोही एवं सोनभद्र
15.	बस्ती	3	बस्ती, संतकबीर नगर, एवं सिद्धार्थ नगर
16.	झांसी	3	झांसी, ललितपुर एवं जालौन
7.	आजमगढ़	3	आजमगढ़, बलिया एवं मऊ
18.	सहारनपुर	3	सहारनपुर, शामली एवं मुजफ्फरनगर

उत्तर प्रदेश की प्राकृतिक

भाबर

हिमालय से निकलने वाली कुछ महत्वपूर्ण नदियाँ पर्वतों से नीचे उतरते समय शिवालिक की ढाल पर 8 से 16 किलोमीटर की चौड़ी पट्टी में गुटिका का निक्षेपण करती हैं। इससे एक मैदान का निर्माण होता है। इसे 'भाबर' कहा जाता है। यह एक उपजाऊ मैदान है।

तराई

शिवालिक की ढाल से होकर आने वाली सभी नदी प्रणालियाँ भाबर पट्टी में विलुप्त हो जाती है। इस पट्टी के दक्षिण में ये सरिताएँ और नदियाँ फिर से निकल आती हैं। इससे एक नम और दलदली क्षेत्र का निर्माण होता है। इस क्षेत्र को 'तराई' के नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र में घने जंगल हैं और वहाँ वन्य प्राणी निवास करते हैं। भारत और पाकिस्तान का बँटवारा होने के पश्चात् पाकिस्तान से आए शरणार्थियों को कृषि योग्य भूमि देने की आवश्यकता थी। अतः कृषि योग्य भूमि उपलब्ध कराने के लिए इस जंगल के बहुत से भाग को काटा जा चुका है।

मध्य का मैदानी क्षेत्र

उत्तर प्रदेश के मध्य मैदानी क्षेत्र मई गंगा यमुना के मैदान का विस्तार है। इसका निर्माण हिमालय एवं दक्षिण के पथरी भाग से बहकर आने वाली जलोढ़ मिटटी से हुआ है यहाँ भने वाली नदिओं को हम दो वर्गों मे बाँट सकते है। प्रथम हिमालय से आने वाले नदिया जैसे यमुना, गंगा, रामगंगा, शरद आदि। दूसरी दक्षिण के पठारो से आने वाली नदिया जैसे चम्बल, बेतवा सोन आदि शामिल है।

उत्तर प्रदेश के दक्षिणी भाग

उत्तर प्रदेश के दक्षिणी भाग को पत्थर के नाम से जाना जाता है। यहाँ भारत के पथरी भाग का उत्तरी विस्तार है उत्तर प्रदेश का पथरी भाग यमुना एवं गंगा नदिओं के दक्षिण मे स्थित है इसका विस्तार झाँसी, जालौन, ललितपुर, हमीरपुर आदि जनपद मे है। इस पठार को बुनेलखण्ड पठार भी कहा जाता है।

मध्य का मैदानी क्षेत्र

उत्तर प्रदेश के मैदानी क्षेत्र है उपजाऊ जलोढ़ मृदा जाती है। यह मिटटी कॉप मिटटी कीचड़ एवं बालू से निर्मित होती है। इसलिए ये पोषक तत्वों से भरपूर एवं भौत उपजाऊ होते है। यहाँ की मिटटी को दो भागो मे विभाजित किया जाता है। कछारी या नवीन जलोढ़ मिटट।
यह उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन पाए जाते है। इन वनो मे साल, पलाश, बेल , नीम आदि वृक्ष पाए जाते है।

दक्षिण का पठार

उत्तर प्रदेश का दक्षिणी भाग पठारों से घिरा हुआ है। यह पठारी भाग यमुना ईवाम गंगा नदियों के दक्षिण मे है। इसका विस्तार झाँसी, ललितपुर, हमीरपुर, इलहाबाद जनपद का दक्षिणी भाग आदि मे है। इस पठार को बुनेलखण्ड पठार भी कहा जाता है।

जलवायु एवं ऋतुएँ

सामान्यता भारत मे उत्तर प्रदेश की जलवायु मानसूनी है। यह सामान्य वर्ष भर तीन ऋतुओं का आगमन रहता है ग्रीषम, वर्षा, और शीत।
जून से लेकर सितम्बर तक वर्षा होती है। प्रदेश की 88 वर्षा इसी ऋतू मे होती ह।
दक्षिणी भवर एवं तराई क्षेत्र मे अधिक वर्षा होती है।
नवम्बर से फरवरी तक शीत ऋतू रहती है।
यह वर्षा रबी की फसलों की फसलों के लिए अतयंत लाभकारी है।

उत्तर प्रदेश को तीन भौतिक विभागों मे बाटा गया है। इस विभाजन का आधार यह की जलवायु, भूआकृति, मृदा, वनस्पति आदि है।

वन्यजीव

उत्तर प्रदेश मे अनेक प्रकार के वन्यजीव मिलते है। जैसे – हाथी, ऊठ, बाघ, भालू, चीता, आदि। और भी अनेको प्रकारो के रंग बिरंगे चिड़िया जैसे कबूतर, मयूर, तोता, मूना, जलमुर्गी भी पाए जाते है। उत्तर प्रदेश मे राष्टय उद्यान दूधवा लखिम पुर खीरी और पिलीभीत जिलों मे 490 वर्ग किमी तक क्षेत्र मे फैला है।

https://www.evidyarthi.in/